पाठ 23

1. परमेश्वर ने इब्राहीम और सारा को जो पुत्र दिया उसका क्या नाम था?

-इसहाक।

2. क्या इब्राहीम को पता था कि परमेश्वर ने इसहाक के वंश के द्वारा उद्धारकर्ता को लाने की योजना बनाई थी?

-हां।

3. परमेश्वर अब्राहम को इसहाक की बलि चढ़ाने की आज्ञा कैसे दे सकता था?

-क्योंकि परमेश्वर ने इब्राहीम को जीवन दिया।

-क्योंकि परमेश्वर ने इसहाक को जीवन दिया।

-क्योंकि परमेश्वर सभी लोगों के परमेश्वर हैं।

4. परमेश्वर ने इब्राहीम से वादा किया था कि इसहाक कई वंशों का पिता होगा, और उद्धारकर्ता उसका वंशज होगा। क्या परमेश्वर ने उसका मन बदल दिया?

-नहीं।

5. क्या इब्राहीम ने सोचा था कि परमेश्वर ने अपना विचार बदल दिया है?

-नहीं।

-अब्राहम परमेश्वर और उनके वादों में विश्वास करता था।

6. इब्राहीम को क्या विश्वास था कि यदि वह इसहाक की बलि चढ़ाएगा तो परमेश्वर क्या करेगा?

-अब्राहम का मानना था कि अगर उसने इसहाक की बलि दी, तो परमेश्वर इसहाक को मरे हुओं में से जिलाएगा।

7. इब्राहीम इसहाक को क्यों नहीं बचा सका?

-क्योंकि इब्राहीम ने इसहाक की बलि देने के लिए अपना चाकू पहले ही उठा लिया था।

8. इसहाक अपने आप को क्यों नहीं बचा सका?

-क्योंकि इब्राहीम ने इसहाक के हाथ पांव बान्धे थे

9. क्या दूसरे लोग हमें बचा सकते हैं?

-नहीं।

10. क्या हम खुद को बचाने में सक्षम हैं?

-नहीं।

11. एकमात्र कौन है जो हमें बचाने में सक्षम है?

-परमेश्वर।

12. किसने इब्राहीम से बात की और इसहाक को बचाया?

-परमेश्वर।

13. इसहाक की जगह लेने के लिए किसने बलिदान दिया?

-परमेश्वर।

14. परमेश्वर ने मेढ़े को उसके सींगों से क्यों बांधा?

-क्योंकि इसहाक की जगह लेने के लिए परमेश्वर केवल एक सिद्ध बलिदान को ही स्वीकार करेगा।

15. इब्राहीम ने उस स्थान को "प्रभु प्रदान करेगा" क्यों कहा?

-अब्राहम का मानना था कि जिस तरह परमेश्वर ने राम को प्रदान किया, उसी तरह परमेश्वर एक दिन लोगों को बचाने के लिए उद्धारकर्ता प्रदान करेंगे।

-इब्राहीम की पत्नी सारा मर गई, और इसहाक अपनी माता के लिये विलाप करने लगा।

-अब्राहम की पत्नी सारा के मरने के बाद, अब्राहम ने अपने पुत्र इसहाक को सांत्वना देने के लिए क्या किया?

आइए पढ़ें उत्पत्ति 24:67 और 25:20

67 तब इसहाक ने रिबका को अपक्की माता सारा के डेरे में ले जाकर रिबका से ब्याह लिया। सो वह उसकी पत्नी बनी, और वह उस से प्रीति रखता या; और इसहाक को अपनी माता की मृत्यु के बाद शान्ति मिली।

20 और जब इसहाक ने रिबका से ब्याह किया तब वह चालीस वर्ष का या।

-इब्राहीम को अपने बेटे इसहाक के लिए एक पत्नी मिली।

-इसहाक की पत्नी का क्या नाम था?

-रिबका।

-रिबका का जन्म उस देश में हुआ था जहां इब्राहीम परमेश्वर के सामने रहता था और उसे कनान ले गया था।

-कुछ समय बाद अब्राहम की भी मौत हो गई।

-क्योंकि इसहाक की पत्नी रिबका बांझ थी, उसके बच्चे नहीं हो सकते थे।

-लेकिन इसहाक ने उसके लिए प्रार्थना की, और परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना का उत्तर दिया।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 25:21-23

21 इसहाक ने अपक्की पत्नी के निमित्त यहोवा से बिनती की, क्योंकि वह बांझ थी। यहोवा ने उसकी प्रार्थना सुन ली, और उसकी पत्नी रिबका गर्भवती हुई।

22 और बच्चों ने आपस में धक्कामुक्की की, और वह बोली, "मेरे साथ ऐसा क्यों हो रहा है?" सो वह यहोवा से पूछने गई।

23 यहोवा ने उस से कहा, तेरी कोख में दो जातियां हैं, और तेरे भीतर से दो जातियां अलग की जाएंगी; एक लोग दूसरे से बलवन्त होंगे, और बड़े छोटे की सेवा करेंगे।”

-रिबका के बच्चे पैदा होने से पहले, उसने परमेश्वर से उनके बारे में पूछा।

-परमेश्वर ने कैसे जवाब दिया?

-परमेश्वर ने जवाब दिया कि रिबका के जुड़वां बच्चे होंगे, और बड़ा बच्चा छोटे बच्चे की सेवा करेगा।

-रिबका के जुड़वा बच्चों के जन्म से पहले, परमेश्वर उनके बारे में सब कुछ जानता था।

-रिबका के जुड़वा बच्चों के जन्म से पहले ही परमेश्वर को उनके बारे में सब कुछ कैसे पता चला?

-परमेश्वर सभी लोगों के बारे में सब कुछ जानता है।

-परमेश्वर से कुछ भी छिपा नहीं है।

-हमारे जन्म से पहले, परमेश्वर हमारे बारे में सब कुछ जानता है।

-परमेश्वर जानता है कि अतीत में हमारे साथ क्या हुआ था।

-परमेश्वर जानता है कि अब हमारे साथ क्या हो रहा है।

-परमेश्वर जानता है कि भविष्य में हमारे साथ क्या होगा।

-कुछ समय बाद रिबका ने जुड़वां लड़कों को जन्म दिया।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 25:24-26

24-जब रिबका के जन्म का समय आया, तो उसके गर्भ में जुड़वां लड़के थे।

25 जो पहिला निकला वह लाल था, और उसका सारा शरीर बालोंवाले वस्त्र के समान था; इसलिए उन्होंने उसका नाम एसाव रखा।

26 इसके बाद उसका भाई एसाव की एड़ी को हाथ से पकड़े हुए निकला; इसलिए उसका नाम याकूब रखा गया।

-रिबका ने जिन जुड़वां लड़कों को जन्म दिया, उनके नाम क्या थे?

-एसाव और याकूब।

-एसाव पहला जन्म था।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 25:27

27-एसाव एक कुशल शिकारी, खुले देश का आदमी बन गया।

-एसाव एक अच्छा शिकारी था, और शिकार करने में बहुत समय लगाता था।

-क्या एसाव ईश्वर में विश्वास करता था?

-नहीं।

-जैकब दूसरा जन्म था।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 25:27

27 याकूब एक शान्त व्यक्ति था, जो तम्बुओं के बीच रहता था।

याकूब ने भेड़-बकरी और गाय-बैल रखा, और अपके डेरे में चुपचाप रहने लगा।

-क्या याकूब परमेश्वर में विश्वास करता था?

-हां।

-एक दिन एसाव और याकूब के बीच कुछ हुआ।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 25:29-34

29 एक बार जब याकूब कुछ स्टू पका रहा था, तब एसाव भूखा भूखा खुले देश से भीतर आया।

30-उसने याकूब से कहा, “जल्दी, मुझे उस लाल स्टू में से कुछ खाने दो! मैं भूखा हूं!"

31-याकूब ने उत्तर दिया, "पहले अपना जन्मसिद्ध अधिकार मुझे बेच दो।"

32 “देखो, मैं मरने पर हूँ,” एसाव ने कहा। "मेरे लिए जन्मसिद्ध अधिकार क्या अच्छा है?"

33 परन्तु याकूब ने कहा, पहिले मुझ से शपथ खा। इसलिथे उस ने अपके पहिलौठे का अधिकार याकूब को बेचकर उस से शपय खाई।

34 तब याकूब ने एसाव को कुछ रोटी और कुछ मसूर की दाल दी। उसने खाया पिया, फिर उठकर चला गया। इसलिए एसाव ने अपने पहिलौठे अधिकार को तुच्छ जाना।

-एक दिन एसाव शिकार से लौटा और उसे बहुत भूख लगी।

-एसाव ने देखा कि याकूब लाल स्टू पका रहा है, और याकूब को आज्ञा दी कि वह उसे कुछ दे।

-क्योंकि एसाव भूखा था, उसने अपना पहिलौठा अधिकार याकूब को कुछ लाल स्टू के लिए बेच दिया।

-एसाव ने अपना पहिलौठा अधिकार क्यों बेचा?

-क्योंकि उसने इसकी कद्र नहीं की।

-एसाव ने क्या महत्व दिया?

-एसाव ने केवल अपने पेट को महत्व दिया।

-एसाव ने केवल अपने मांस को महत्व दिया।

-एसाव और याकूब किस प्रकार भिन्न थे?

-एसाव ने नहीं सोचा था कि वह पाप में पैदा हुआ था।

-याकूब जानता था कि वह पाप में पैदा हुआ है।

-एसाव ने नहीं सोचा था कि उसने परमेश्वर के खिलाफ पाप किया है।

-याकूब जानता था कि उसने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है।

-एसाव ने यह नहीं सोचा था कि पाप अनन्त मृत्यु लाता है।

-याकूब जानता था कि पाप अनन्त मृत्यु लाता है।

-एसाव परमेश्वर का अनुसरण नहीं करना चाहता था।

-याकूब परमेश्वर का अनुसरण करना चाहता था।

-एसाव नहीं चाहता था कि परमेश्वर उसे बचाने के लिए उद्धारकर्ता भेजे।

-याकूब चाहता था कि परमेश्वर उसे बचाने के लिए उद्धारकर्ता भेजे।

-जेठा होने के नाते, एसाव के लिए पहिलौठे का अधिकार था।

-जेठा होने के नाते, परमेश्वर एसाव की वंशावली के माध्यम से उद्धारकर्ता को भेजेगा।

-लेकिन एसाव ने अपने पहिलौठे के अधिकार को महत्व नहीं दिया।

-एसाव नहीं चाहता था कि ईश्वर अपने वंशजों के माध्यम से उद्धारकर्ता को भेजे।

-एसाव केवल लाल स्टू चाहता था।

-एसाव केवल वही चाहता था जो उसके पेट ने उसे बताया।

-क्या हम उसका पालन करते हैं जो हमारा पेट हमें बताता है, या हम परमेश्वर का पालन करते हैं?

-क्या हम उसका पालन करते हैं जो हमारा शरीर हमें बताता है, या क्या हम परमेश्वर का अनुसरण करते हैं?

-अगर हम अपने पेट का पालन करते हैं, तो यह हमें मौत की ओर ले जाएगा।

-अगर हम अपने मांस का पालन करते हैं, तो यह हमें मौत की ओर ले जाएगा।

-यदि हम परमेश्वर का अनुसरण करते हैं, तो वह हमें जीवन की ओर ले जाएगा।

-क्योंकि एसाव ईश्वर में विश्वास नहीं करता था, ईश्वर ने याकूब को चुना।

-क्योंकि एसाव परमेश्वर में विश्वास नहीं करता था, परमेश्वर ने उद्धारकर्ता को याकूब की रेखा के माध्यम से भेजने का फैसला किया।

-परमेश्वर ने याकूब के वंश के माध्यम से उद्धारकर्ता को भेजने का चुनाव क्यों किया?

-क्योंकि एसाव ईश्वर में विश्वास नहीं करता था।

-क्योंकि एसाव ईश्वर में विश्वास नहीं करता था, ईश्वर ने याकूब को जन्मसिद्ध अधिकार दिया।

-जब परमेश्वर ने याकूब को पहिलौठे का अधिकार दिया, तो एसाव बहुत क्रोधित हुआ।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 27:41

41- एसाव ने याकूब से उसके पिता की आशीष के कारण बैर रखा। उस ने मन ही मन कहा, मेरे पिता के शोक के दिन निकट हैं; तब मैं अपने भाई याकूब को मार डालूंगा।"

-एसाव याकूब से इतना क्रोधित था कि उसने याकूब को मारने की योजना बनाई।

-लेकिन याकूब की मां रिबका ने सुना कि एसाव याकूब को मारना चाहता है।

-तब रिबका ने याकूब को बुलाकर उस देश में भेज दिया जहां वह उत्पन्न हुई थी।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 27:42-44

42 जब रिबका को यह बताया गया कि उसके बड़े पुत्र एसाव ने क्या कहा है, तब उसने अपने छोटे पुत्र याकूब को बुलवा भेजा, और उस से कहा, तेरा भाई एसाव तुझे मारने के विचार से शांत हो रहा है।

43 सो अब, हे मेरे पुत्र, जो मैं कहता हूं वह कर; हारान में अपके भाई लाबान के पास तुरन्त भाग जा।

44 जब तक तेरे भाई का क्रोध शान्त न हो जाए, तब तक उसके पास कुछ समय ठहरे।"

-याकूब अपने माता पिता को छोड़कर हारान देश की ओर चलने लगा।

-हारान वह भूमि थी जहाँ याकूब की माँ रिबका का जन्म हुआ था।

-हारन वह भूमि थी जहाँ याकूब के दादा अब्राहम रहते थे, इससे पहले कि परमेश्वर उसे कनान ले गए।

-क्योंकि हारान बहुत दूर था, याकूब की यात्रा कई दिनों तक चली।

-उस रात जब याकूब सो गया, तो परमेश्वर ने याकूब को एक स्वप्न दिया।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 28:10-13

10 याकूब बेर्शेबा से निकलकर हारान को चल पड़ा।

11-जब वह एक निश्चित स्थान पर पहुँचा, तो वह रात के लिए रुक गया क्योंकि सूरज ढल चुका था। वहाँ एक पत्थर लेकर उसने उसे अपने सिर के नीचे रख लिया और सोने के लिए लेट गया।

12-उसने एक स्वप्न देखा, जिसमें उसने एक सीढ़ी को पृथ्वी पर टिकी हुई देखा, जिसकी चोटी स्वर्ग तक पहुंची, और परमेश्वर के दूत उस पर चढ़ते और उतरते थे।

13-वहां उसके ऊपर यहोवा खड़ा हुआ।

-याकूब ने सपने में क्या देखा जो परमेश्वर ने उसे दिया था?

-याकुब ने एक सीढ़ी देखी।

-सीढ़ी का निचला सिरा कहाँ छू रहा था?

-सीढ़ी का निचला सिरा धरती को छू रहा था।

-सीढ़ी का ऊपरी सिरा कहाँ पहुँच रहा था?

-सीढ़ी का ऊपरी सिरा स्वर्ग में पहुंच गया।

-इसका क्या मतलब था कि सीढ़ी धरती को छू रही थी और स्वर्ग में पहुंच रही थी?

-सीढ़ी धरती और स्वर्ग को एक साथ ला रही थी।

-सीढ़ी के शीर्ष पर कौन था?

-परमेश्वर।

-कौन सीढ़ी से ऊपर-नीचे चल रहा था?

-फरिश्ते।

-इसका क्या मतलब था कि फ़रिश्ते सीढ़ी से ऊपर-नीचे चल रहे थे?

-वह परमेश्वर याकूब का परमेश्वर बनना चाहता था।

-परमेश्वर ने याकूब को यह सपना क्यों दिया?

-परमेश्वर याकूब को आने वाले उद्धारकर्ता के बारे में सिखा रहे थे।

-परमेश्वर याकूब को उद्धारकर्ता के बारे में क्या सिखा रहा था?

-जैसे सीढ़ी पृथ्वी और स्वर्ग को एक साथ ला रही थी, वैसे ही परमेश्वर उद्धारकर्ता को भेजेगा जो लोगों को पृथ्वी पर और परमेश्वर को स्वर्ग में एक साथ लाएगा।

-शुरुआत में, परमेश्वर आदम और हव्वा के साथ-साथ चला।

-लेकिन आदम और हव्वा ने परमेश्वर की अवज्ञा की, और वे परमेश्वर से अलग हो गए।

-आदम और हव्वा के पास परमेश्वर के साथ वापस आने का कोई रास्ता नहीं था।

-लेकिन परमेश्वर ने उद्धारकर्ता को भेजने का वादा किया, जो पृथ्वी पर लोगों को और स्वर्ग में परमेश्वर को फिर से एक साथ लाएगा।

-उद्धारकर्ता लोगों को बचाने के लिए आएगा, ताकि परमेश्वर और लोग फिर से एक साथ चल सकें।

-यहाँ एक दृष्टांत है:

-पैट्रिक और जोसेफ बहुत अच्छे दोस्त थे।

-उनके दुश्मन, हालांकि, उन दोनों से नफरत करते थे।

-दुश्मन को उनकी दोस्ती से बहुत जलन होती थी।

-एक दिन, दुश्मन ने पैट्रिक और जोसेफ की दोस्ती को नष्ट करने का एक तरीका सोचा।

-दुश्मन पैट्रिक के पास गया और उससे कहा कि यूसुफ उसे चोट पहुँचाना चाहता है।

-पैट्रिक ने दुश्मन के झूठ पर विश्वास किया, और अपने दोस्त जोसेफ से अलग हो गया।

-जोसेफ, हालांकि, अभी भी पैट्रिक से प्यार करता था, और अपनी दोस्ती को बहाल करने का एक तरीका सोचा।

-यूसुफ ने अपने बेटे को पैट्रिक से बात करने और उसे यह बताने के लिए भेजा कि दुश्मन ने उसे धोखा दिया है।

-बेटे की वजह से जोसेफ और पैट्रिक एक बार फिर दोस्त बन गए।

-शैतान ने आदम और हव्वा को धोखा दिया और वे परमेश्वर से अलग हो गए।

-फिर भी परमेश्वर ने उद्धारकर्ता को भेजने का वादा किया जो परमेश्वर और लोगों को फिर से एक साथ लाएगा।

-जिस तरह सीढ़ी ही स्वर्ग तक पहुंचने का एकमात्र रास्ता था, उसी तरह स्वर्ग तक पहुंचने के लिए उद्धारकर्ता ही एकमात्र रास्ता है।

-अपने सपने में, परमेश्वर ने याकूब से बात की।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 28:13ख-15

13-परमेश्वर ने कहा: "मैं यहोवा, तुम्हारे पिता इब्राहीम का परमेश्वर और इसहाक का परमेश्वर हूं। मैं तुम्हें और तुम्हारे वंशजों को वह भूमि दूंगा जिस पर तुम लेटे हो।

14 तेरा वंश पृथ्वी की धूल के समान होगा, और तू पश्चिम और पूर्व, उत्तर और दक्खिन तक फैल जाएगा। पृथ्वी के सब लोग तेरे और तेरे वंश के द्वारा आशीष पाएंगे।

15 मैं तेरे संग हूं, और जहां कहीं तू जाएगा वहां तेरी चौकसी करूंगा, और मैं तुझे इस देश में फिर ले आऊंगा। मैं तुम्हें तब तक नहीं छोड़ूंगा जब तक कि मैंने वह नहीं किया जो मैंने तुमसे वादा किया था।"

-अतीत में, परमेश्वर ने लोगों से सपनों में बात की।

-आज, परमेश्वर सबसे अधिक बार लोगों से कैसे बात करते हैं?

-आज, परमेश्वर अक्सर अपनी पुस्तक, बाइबल के माध्यम से लोगों से बात करता है।

-परमेश्वर ने याकूब से क्यों बात की?

-परमेश्वर याकूब को वादे दे रहे थे।

-जो वादे परमेश्वर ने अब्राहम और इसहाक को दिए थे, परमेश्वर अब याकूब को दे रहे थे।

-परमेश्वर ने याकूब से क्या वादा किया था?

-परमेश्वर ने वादा किया था कि याकूब के कई वंशज होंगे।

-परमेश्वर ने वादा किया कि वह याकूब को आशीर्वाद देगा।

-परमेश्वर ने उद्धारकर्ता को भेजकर सभी लोगों को आशीर्वाद देने का वादा किया, जो याकूब के वंशजों में से एक होगा

-क्या परमेश्वर उद्धारकर्ता को भेजने के अपने वादे को भूल गया?

-नहीं।

-परमेश्वर उद्धारकर्ता को भेजने के अपने वादे को नहीं भूल सकते।

-परमेश्वर उद्धारकर्ता को भेजने के अपने वादे को क्यों नहीं भूल सकते?

-क्योंकि परमेश्वर भूल नहीं सकते।

-क्योंकि परमेश्वर बदल नहीं सकते।

-क्योंकि परमेश्वर हमेशा अपने वादों को निभाते हैं।

-अगली सुबह, याकुब ने अपनी यात्रा जारी रखी।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 29:1

1- तब याकूब अपनी यात्रा पर चला, और पूर्वी लोगों के देश में आया।

-याकूब ने अपनी यात्रा तब तक जारी रखी जब तक कि वह अंत में हारान की भूमि पर नहीं पहुंच गया।

-हारान में याकूब कई वर्ष जीवित रहा।

-हारान में याकूब ने दो बहनों से विवाह किया, और बारह पुत्रों का पिता बना।

-याकूब के हारान देश में बहुत वर्ष रहने के बाद, परमेश्वर ने एक बार फिर याकूब से बात की।

-जब याकूब हारान में रह रहा था तब परमेश्वर ने याकूब से क्या कहा?

आइए पढ़ें उत्पत्ति 31:13

13-परमेश्वर ने कहा, मैं बेतेल का परमेश्वर हूं, जहां तू ने खम्भे का अभिषेक किया और जहां तू ने मेरे लिथे मन्नत मानी है। अब इस देश को तुरन्त छोड़ दो और अपनी जन्मभूमि को लौट जाओ।"

-याकूब के हारान में कई वर्ष रहने के बाद, परमेश्वर ने याकूब से क्या कहा?

-परमेश्वर ने याकूब से कहा कि वह हारान को छोड़कर कनान देश में लौट जाए।

-जब याकूब कनान देश लौट रहा था, तब परमेश्वर ने याकूब को एक नया नाम दिया।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 32:28

28 तब यहोवा ने कहा, तेरा नाम अब याकूब नहीं, वरन इस्राएल होगा।

-परमेश्वर ने याकूब को क्या नया नाम दिया?

-इजराइल।

-इज़राइल नाम का अर्थ है ईश्वर के साथ संघर्ष करना।

-अगले पाठ में हम याकूब के बारे में और जानेंगे।